43 वर्ष | एकादश अंक | जून 2021

512 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

इस अंक में...

7 सम्पादकीय

9 राष्ट्रीय घटनाक्रम

15 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम

20 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य

30 नवीनतम सामान्य ज्ञान

36 खेलकूद

38 रोजगार समाचार

39 संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग प्रा. परीक्षा हेतु उपयोगी सामग्री : भारत एवं विश्व का भूगोल

51 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

54 अनुप्रेरक युवा प्रतिभा

56 सिविल सेवा परीक्षा में सफलता : यह अच्छी तरह से कई कार्य करने और निरन्तरता के बारे में है

फोकस

59 (i) वैश्विक लैंगिक अन्तराल रिपोर्ट 2021 में भारत 28 पायदान नीचे खिसका

60 (ii) ईज ऑफ लिविंग सूचकांक (ईओएलआई)2020 एवं नगरपालिका कार्य निष्पादन सूचकांक (एमपीआई) 2020

विविधा

62 स्मरणीय तथ्य

65 विश्व परिदृश्य

69 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं

73 ऐतिहासिक स्थल एवं ऐतिहासिक व्यक्तित्व

लेख

76 आर्थिक लेख—श्रम सुधारों की दिशा में सार्थक कदम

78 प्रौद्योगिकी लेख—साइबर सुरक्षा और भारत

81 समसामयिक लेख—प्रवासी भारतीय समुदाय का महत्व

82 समसामयिक राजनीतिक लेख—म्यांमार : लोकतंत्र के लिए संघर्ष

85 वैश्विक महामारी लेख—वैक्सीन मैत्री के बहाने वैश्विक डिप्लोमेसी

87 सामरिक लेख—रक्षा उत्पादों में आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ रहा है : डीआरडीओ

90 अन्तर्राष्ट्रीय लेख—दलाई लामा, तिब्बत, भारत, अमरीका और चीन

92 कृषि लेख—कृषि उत्पादन में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता भारत

हल प्रश्न-पत्र

97 सम्मिलित रक्षा सेवा परीक्षा, 2021

105 उत्तराखण्ड एम.एड. प्रवेश परीक्षा, 2020

162 **तर्कशक्ति :** आईबीपीएस एसओ राजभाषा अधिकारी (प्रा.) परीक्षा, 2019

168 **संख्यात्मक अभियोग्यता :** नाबार्ड (ग्रेड-बी) ऑफीसर परीक्षा, 2017

ऐच्छिक विषय

131 **सामाजिक विज्ञान**
आगामी उत्तर प्रदेश प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयन परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

142 **गृह विज्ञान**
आगामी उ.प्र. प्रवक्ता भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न-पत्र

150 **भूगोल**
यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2020

वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान

113 आगामी सिविल सर्विसेज (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

123 आगामी न्यायिक सेवा प्रारम्भिक परीक्षा 2021 हेतु विशेष हल प्रश्न

138 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

140 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता

ज्ञानार्जन के नवीन क्षितिज

94 सार संग्रह

159 वर्षांत समीक्षा 2020—गृह मंत्रालय

171 क्या आप जानते हैं ?

172 अपना ज्ञान बढ़ाइए

श्रेष्ठतर प्रतिभागी

174 **प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—**कर्म ही हर सफलता की बुनियाद है

176 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

178 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-501 का परिणाम

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

सम्पादकीय

जीवन को कविता समझिए और कल्पनाओं को साकार कीजिए

कवि शिरोमणि डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' से कविता सुनने के उपरान्त पं. जवाहर लाल नेहरू ने 'सुमन' जी की डायरी में यह सन्देश लिखा था–''अपने जीवन को एक कविता बनाना चाहिए.''

कवि किसी आदर्श को जन्म देता है. तदनुसार उसके मनोभाव, भावनाओं को जन्म देते हैं. भावनाएं अपनी अभिव्यक्ति हेतु धारणकर्ता को प्रेरित करती हैं. यह अभिव्यक्ति कविता कही जाती है. अतएव जीवन को कविता का रूप देने का अर्थ है–अपनी महत्वाकांक्षाओं और अपने स्वप्नों को, जीवन में उतारना. कवि-कर्म एक महती साधना है, जीवन का निर्माण भी एक महती साधना होना चाहिए. अध्ययन, अध्यवसाय एवं अनुभव कविता को सार्थकता, सजीवता एवं लोकग्राह्यता प्रदान करते हैं. जीवन को सफल एवं सार्थक बनाने के लिए हमें कवि कर्म के संदर्भ में इंगित साधना के सोपानों पर अग्रसर होने की सामर्थ्य का सम्पादन करना होगा, जिसके लिए महत्वाकांक्षी साधक में दृढ़ निश्चय, संघर्षशीलता, गुण-ग्राह्यता आदि गुणों का विकसित होना अपेक्षित है.

कल्पना का जगत् बहुत ही सुन्दर एवं मधुर होता है. हमारे स्वप्नों का जगत् भी ऐसा ही होता है. कल्पना प्रायः यथार्थ पर आधारित होती है, परन्तु स्वप्नों के लिए यथार्थ की भूमि अपेक्षित नहीं है. यही कारण है कि हमारी महत्वाकांक्षाएं कभी-कभी स्वप्नों की सीमाओं में पहुँचकर शेखचिल्ली की बातें-सी प्रतीत होने लगती हैं. हमें कल्पना की सीमाओं का उल्लंघन करते समय सावधान रहना चाहिए. कवि एवं विचारक रामधारी सिंह 'दिनकर' ने बहुत ठीक लिखा है कि हम कल्पना के कितने ही ताने-बाने बुनें, तब भी स्वप्नों की सीमाओं को नहीं बाँधा जा सकता है. अतएव अपेक्षित है कि स्वप्नों के स्वभाव को ध्यान में रखने का अभ्यास करें.

सैम्युअल जॉनसन के मतानुसार कविता वह कला है जिसमें कल्पनाशक्ति, विवेक की सहायक होकर सत्य और आनन्द का सम्मिश्रण करती है. यदि हम जीवन को कविता मानें, तो हमारे जीवन में महत्वाकांक्षाएं अथवा हमारे स्वप्न विवेक सम्मत होने चाहिए. हम जीवन के सत्य से कभी विमुख न हों. ऐसा करने पर हमारा जीवन सफल एवं आनन्दमय हो सकता है. पं. नेहरू एक अत्यन्त अनुशासित एवं विवेकशील व्यक्ति थे. संदर्भित संदेश देते समय उनके मस्तिष्क में यह बात रही होगी कि हम स्वप्न देखें, कुछ विद्वानों के मतानुसार कविता मानवता की उच्चतम अनुभूति की अभिव्यक्ति है. तदनुसार, हमारे जीवन की सार्थकता यह है कि हमारी अनुभूतियाँ सर्वथा उदात्त हों और हमारी वाणी एवं हमारे आचरण उदात्त-तागर्भित हों.

कवयित्री महादेवी वर्मा का कथन है कि ''मेरे लिए तो मनुष्य एक सजीव कविता है.'' कवि के शब्दचित्र संसार के साथ उसके व्यक्तित्व की एकता को प्रकट करते हैं. मनुष्य का जीवन एक सजीव कविता तब ही बन सकता है जब उसका हृदय स्वार्थ-सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से ऊपर उठकर ऐसी भावभूमि पर पहुँच जाए, जहाँ शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है. इस परिप्रेक्ष्य में हमारा युवा वर्ग यह विचार करेगा कि वह समय-समय पर आत्म-निरीक्षण करके अपने स्वप्नों को अनुशासित करे और उन्हें सार्थक बनाने के उपायों का सम्पादन करे. याद रखिए कविता प्रतिभा से उत्पन्न होती है और प्रतिभा सतत् प्रयास करने की शक्ति ही तो है. जीवन को कविता की भाँति लोक-रंजक, लोक-ग्राह्य एवं उपयोगी बनाने के लिए आपको सतत् प्रयास करने के सूत्र को हृदयंगम करना होगा. याद रखिए, सफलता भाग्य से नहीं, बल्कि उचित तैयारी और दृढ़ निश्चय से प्राप्त होती है. कवि-कर्म में भी अनवरत् अभ्यास पर बल दिया जाता है. इस संदर्भ में यह निवेदन कर देना आवश्यक है कि सच्ची कविता यश के साथ सम्पत्ति का भी हेतु बनती है. जीवन भी वही सार्थक है, जो सम्पत्ति एवं यश का विधान कर सके.

जिन्हें हम आज महान् कवि कहते हैं, उन सभी को आरम्भ में संघर्ष करना पड़ा था–अनेक कवियों की रचनाएं प्रकाशकों एवं सम्पादकों ने सखेद वापस लौटाई थीं. जीवन को सफल बनाने के लिए भी व्यक्ति को इसी अग्नि-पथ से गुजरना पड़ता है. आरम्भिक असफलताओं के कारण जो बैठ जाते हैं, वे बैठे ही रह जाते हैं, जो यह सोच लेते हैं कि बाधाओं का काम बाधा उपस्थित करना है, हमारा काम आगे बढ़ना है, वे देर-सबेर लक्ष्य को प्राप्त कर ही लेते हैं. नव ज्योतिसिंह सिंधु ने बहुत ही मनोरंजन शैली में अनवरत् प्रयत्न का संदेश दिया है–Nobody travels on the road to success without a puncture or two— सफलता की राह लम्बी है. इस पर चलने वाले वाहन के पहियों में एक-दो पंक्चर होना स्वाभाविक है.

कविता के बीज स्थायी भावों के रूप में प्रत्येक व्यक्ति के अन्तस् में सुप्तावस्था में रहते हैं. सहृदयता एवं प्रतिभा के जल-सिंचन द्वारा वे अंकुरित और अभिव्यक्ति रूप में प्रस्फुटित हो जाते हैं. सफलता भी प्रत्येक व्यक्ति के अन्तस् में निवास करती है. महत्वाकांक्षा एवं विवेक के जीवन-जल द्वारा उसको प्राप्त किया सकता है. कवि-कर्म की भाँति मानव-जीवन भी साधना है.

कविता को जीवन की आलोचना कहा जाता है आलोचना द्वारा उसका मार्गदर्शन और विकास होता है. अपनी कृति के गुण-दोष विवेचन की जानकारी प्राप्त करने के उपरान्त कवि को अपनी रचना के दोषों का निवारण करके अपेक्षाकृत अधिक सुष्ठु रूप में प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहन प्राप्त होता है. इस दृष्टि से भी क्या हमारा जीवन एक कविता के समान नहीं होना चाहिए? यह निर्विवाद है कि हमारा जीवन सुख-दुःख का तथा मधुर-कटु अनुभवों का संघात है और उन्हीं के अनुसार हमारे जीवन का संचालन होता रहता है. आलोचनाएं हमें जीवन-पद्धति में सुधार करने का अवसर प्रदान करती हैं, जो व्यक्ति आलोचना एवं आलोचकों से परहेज करते हैं, वे जहाँ के तहाँ बने रहते हैं. वे समझते हैं कि हम कोई गलती करते ही नहीं हैं, हमें किसी के मार्गदर्शन की आवश्यकता ही नहीं है. इस वर्ग के व्यक्तियों को लक्ष्य करके कहा गया है कि ये अज्ञानी हैं और जड़वत् हैं, जो व्यक्ति त्रुटि से अवगत होकर सुधार कर लेता है, वह बुद्धिमान कहा जाता है, क्योंकि वह अपने कृतित्व को श्रेष्ठतर बनाता है अथवा उसको श्रेष्ठतर बनाने के लिए प्रयासरत् होता है, जो ऐसा नहीं करता है, वह मूर्ख कहा जाता है, जो कोई गलती नहीं करता है, वह तो जड़ है ही, क्योंकि वह कुछ करता ही नहीं है.

कवि रहीम ने ठीक ही कहा है–

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिनु पानी साबुन बिना, निरमल करे सुभाय॥

अमरीकी दार्शनिक कवि इमर्सन ने तो यहाँ तक कहा है कि जब मैं लोगों को अपनी आलोचना करते हुए देखता हूँ या सुनता हूँ, तब मुझे विश्वास हो जाता है कि मैं जीवित हूँ.

कविता स्वान्तःसुखाय भी होती है और पर-हिताय भी होती है. जीवन भी स्व और पर की यमुना-गंगा का संगम है. अंग्रेजी कवि रॉबर्ट ब्राउनिंग का यह कथन आपका प्रेरणास्रोत होना चाहिए–The best is yet to come सर्वोत्तम अभी आने को है. ●●●